मुहर्रम के महीने की फज़ीलत

और उस में करने के योग्य काम

[*हिन्दी*]

فضل شهر الله المحرم وما يشرع فيه من الأعمال

[اللغة الهندية]

लेख

अताउर्रहमान ज़ियाउल्लाह

إعداد: عطاءالرحمن ضياء الله

संशोधन

शफीक़ुर्रहमान ज़ियाउल्लाह मदनी

مراجعة: شفيق الرحمن ضياء الله المدني

इस्लामी आमन्त्रण एंव निर्देश कार्यालय रब्वा, रियाज़, सऊदी अरब

المكتب التعاوني للدعوة وتوعية الجاليات بالربوة - الرياض - المملكة العربية السعودية

1428-2007

islamhouse.com

بسم الله الرحمن الرحيم

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अल्लाह के नाम से आरम्भ करता हूँ जो अति मेहरबान और दयालु है।

إن الحمد لله نحمده ونستعينه ونستغفره ونعوذ بالله من شرور أنفسنا ومن سيئات أعمالنا ، من يهده الله فلا مضل له ومن يضلل فلا هادي له ، وأشهد أن لا إله إلا الله وحده لا شريك له وأشهد أن محمدا عبده ورسوله صلى الله عليه وعلى آله وأصحابه وسلم تسليما كثيرا، أما بعد :

हर प्रकार की प्रशंसा और गुण-गान सर्व संसार के पालन कर्ता अल्लाह के लिए योग्य है जिस ने अपनी महान कृपा से हमें इस्लाम की नेमत से सम्मानित किया, तथा अल्लाह की कृपा और शान्ति अवतरित हों अन्तिम सन्देष्टा मुहम्मद पर जिनके द्वारा हमें इस्लाम का संदेश प्राप्त हुआ।

अल्लाह का महीना मुहर्रम एक महान और शुभ महीना है, हिज्री-वर्ष -इस्लामी जन्त्री- का यह प्रथम महीना तथा उन चार हुर्मत वाले महीनों में से एक है जिन के विषय में अल्लाह तआला का फर्मान है:

﴿إِنَّ عِدَّةَ الشُّهُورِ عِندَ اللَّهِ اثْنَا عَشَرَ شَهْراً فِي كِتَابِ اللَّهِ يَوْمَ خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالأَرْضَ مِنْهَا أَرْبَعَةٌ حُرُمٌ ذَلِكَ الدِّينُ الْقَيِّمُ فَلاَ تَظْلِمُواْ فِيهِنَّ أَنفُسَكُمْ ﴾

"अल्लाह के निकट महीनों की संख्या अल्लाह की किताब में १२ -बारह- है उसी दिन से जब से उस ने आकाश और धरती को पैदा किया है, उन में से चार हुर्मत व अदब -सम्मान- वाले हैं। यही शुद्ध धर्म है, तुम इन महीनों में अपनी जानों पर अत्याचार न करो।" (सूरतुत-तौबाः ९/३६)

तथा अबू बक्रह रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः

"ज़माना घूम घुमा कर फिर उसी अवस्था पर आ गया है जिस पर उस समय था जब अल्लाह ने आकाश और धरती की रचना की, साल १२ महीनों का है जिन में चार हुर्मत -सम्मान एंव प्रतिष्ठा- वाले हैं, तीन लगातार; ज़ुल-क़अ्दा, ज़ुल-हिज्जा और मुहर्रम तथा चौथा रजब-मुज़र (मुज़र क़बीले से संबंधित रजब का महीना) जो जुमादल-आखिरा और शाबान के मध्य में पड़ता है।" (सहीह बुखारी एंव सहीह मुस्लिम)

ज्ञात हुआ कि मुहर्रम का महीना उन महीनों में से एक जिन्हें अल्लाह तआला ने आकाश एंव धरती की रचना करने के दिन ही से हुर्मत, सम्मान और प्रतिष्ठा वाला महीना घोषित किया है और विशेष रूप से इन महीनों में अत्याचार करने, तथा लड़ाई-झगड़ा और पाप कर के इनके सम्मान एंव प्रतिष्ठा को भंग करने से रोका है, अतः अल्लाह का आज्ञा पालन करते हुए इन महीनों का सम्मान करना आवश्यक है।

यहीं से यह तथ्य भी स्पष्ट हो जाता है कि मुहर्रम के महीने की हुर्मत बहुत प्राचीन है और इसका हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु की शहादत के घटने से कोई संबंध नहीं है जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के देहान्त के ५० वर्ष पश्चात घटित हुआ। अतः इस घटना से संबंधित जो बातें भी नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से जोड़ी जाती हैं वह असत्य और अनाधार हैं।

मुहर्रम के महीने की फज़ीलत और इस में किये जाने वाले विशिष्ट कार्य के विषय में सहीह हदीसों में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से जो कुछ प्रमाणित है उस का उल्लेख किया जा रहा है :

1. सामान्य रूप से मुहर्रम के महीने में अधिक से अधिक नफ्ली रोज़ा रखने की फज़ीलतः

अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः

"रमज़ान के बाद सब से श्रेष्ठ रोज़े अल्लाह के महीने मुहर्रम के हैं।" (सहीह मुस्लिम)

इस हदीस से मुहर्रम के महीने में सामान्य रूप से रोज़ा रखने की फज़ीलत का पता चलता है, तथा इस से अभिप्राय मुहर्रम के महीने में अधिक से अधिक रोज़ा रखना है, पूरे महीने का रोज़ा रखना नहीं; क्योंकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से रमज़ान के अतिरिक्त किसी और महीने का पूरा रोज़ा रखना प्रमाणित नहीं है।

2. आशूरा का रोज़ा रखने की फज़ीलतः

मुहर्रम महीने के दसवें दिन को अरबी भाषा में "आशूरा" कहते हैं, इतिहास में यह एक महान दिन है जिस में अल्लाह तआला ने अपने पैग़म्बर मूसा अलैहिस्सलाम और उनकी क़ौम बनी इस्राईल को उनके समय काल के एक बड़े घमण्डी अत्याचारी राजा फिर्औन से मुक्ति दिलाई तथा फिर्औन को उसकी क़ौम समेत समुद्र में डबो दिया, जिस पर मूसा अलैहिस्सलाम ने अल्लाह तआला का शुक्र अदा करते हूए इस दिन का रोज़ा रखा, चुनांचे यहूद भी इस दिन का रोज़ा रखते थे और इसका सम्मान करते थे।

सहीह बुखारी एंव मुस्लिम की एक हदीस में आईशा रज़ियल्लाहु अन्हा से वर्णित है कि जाहिलियत के समय काल में कुरैश भी आशूरा का रोज़ा रखते थे।

अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा कहते हैं कि जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मक्का से हिज्रत कर के मदीना आए तो यहूद को आशूरा के दिन का रोज़ा रखते हुए देखा, आप ने पूछाः **"यह क्या है?"** उन्होंने कहाः यह एक शुभ दिन है, इसी दिन अल्लाह तआला ने बनी इस्राईल को उनके दुश्मनों से मुक्ति दिलाई, इस पर मूसा अलैहिस्सलाम ने उस दिन का रोज़ा रखा, तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः **"मैं मूसा अलैहिस्सलाम का तुम से अधिक योग्य हूँ,"** चुनांचे आप ने

इस दिन का रोज़ा रखा और सहाबा को भी इस दिन रोज़ा रखने का आदेश दिया। (सहीह बुखारी एंव सहीह मुस्लिम)

विशेष रूप से रमज़ान के रोज़े फर्ज़ (अनिवार्य) होने से पहले नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सहाबा को आवश्यक रूप से आशूरा का रोज़ा रखने का आदेश करते तथा इस पर उभारते और बल देते थे। जैसाकि सहीह मुस्लिम (हदीस न.११३८) में जाबिर बिन समुरह की हदीस से ज्ञात होता है।

तथा रुबैयिअ् बिन्त मुअव्विज़ रज़ियल्लाहु अन्हा कहती हैं: कि आशूरा की सुबह नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अन्सार की बस्तियों में यह कहला भेजा कि :

"जिस ने सुबह खा पी लिया हो वह शेष दिन (रोज़े की अवस्था में) पूरा करे, और जिस ने सुबह कुछ खाया पिया न हो वह रोज़े से रहे।"

वह कहती हैं कि फिर हम उस दिन रोज़ा रखते थे और अपने बच्चों को भी रोज़ा रखवाते थे, हम उनके लिए रूई का खिलौना बना के रखते थे, यदि कोई खाने के लिए रोता तो हम उसे वही दे कर बहला देते थे यहाँ तक कि रोज़ा खोलने का समय हो जाता। (सहीह बुखारी एंव सहीह मुस्लिम)

सल्मह बिन अक्वह रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि उन्हों ने कहा कि: नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अस्लम क़बीले के एक आदमी को आदेश दिया कि वह लोगों में यह घोषणा कर दे कि जिस ने कुछ खा लिया है वह शेष दिन रोज़े से रहे और जिसने कुछ न खाया हो वह रोज़ा रखे; क्योंकि आज आशूरा का दिन है।" (सहीह बुखारी एंव सहीह मुस्लिम)

तथा अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा कहते हैं:

"मैं ने अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को आशूरा के दिन और रमज़ान के महीने के अतिरिक्त किसी अन्य दिन को दूसरे दिनों से अफज़ल जान कर रोज़ा रखते हुए नहीं देखा।" (सहीह बुखारी एंव सहीह मुस्लिम)

रमज़ान के रोज़े फर्ज़ होने के पश्चात आशूरा के रोज़े की अनिवार्यता समाप्त हो गई, किन्तु उसका रोज़ा रखना अब भी मुस्तहब है।

3. आशूरा का रोज़ा एक वर्ष के गुनाहों का कफ़्फ़ारा है:

अबू क़तादह रज़ियल्लाहु अन्हु अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से रिवायत करते हैं कि आप ने फरमाया:

"आशूरा के दिन के रोज़े के बारे में मुझे अल्लाह तआला से आशा है कि यह पिछले एक वर्ष के गुनाहों का कफ़्फ़ारा हो जाए गा।" (सहीह मुस्लिम)

4. आशूरा के दिन के रोज़े के साथ-साथ उस से एक दिन पहले या एक दिन बाद भी रोज़ा रखना चाहिए:

अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा कहते हैं कि:

“जब अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने आशूरा का रोज़ा रखा और उस दिन रोज़ा रखने का आदेश दिया, तो लोगों ने कहा: ऐ अल्लाह के रसूल! यहूद और नसारा (ईसाई) इस दिन को बहुत महत्व और सम्मान देते हैं, तो रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहा: **“अगले वर्ष यदि अल्लाह ने चाहा तो हम नवीं तारीख को (भी) रोज़ा रखें गे।”** इब्ने अब्बास कहते हैं: अगला वर्ष आने से पहले ही आप अल्लाह को प्यारे हो गए।” एक रिवायत के शब्द यह हैं कि : **“यदि मैं अगले साल तक ज़िन्दा रहा तो नवीं तारीख को (भी) रोजा रखूँ गा।”** (सहीह मुस्लिम)

तथा अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया:

“आशूरा का रोज़ा रखो, और उस में यहूद का विरोध करो, इस प्रकार कि आशूरा से पहले एक दिन या उस के बाद एक दिन और रोज़ा रखो।” (मुसनद अहमद)

अर्थात ९, १० मुहर्रम या १०, ११ मुहर्रम का रोज़ा रखो।

अल्लामा इब्ने क़ैयिम रहिमहुल्लाह फरमाते हैं:

“आशूरा के रोज़े की तीन श्रेणियाँ हैं: सब से सम्पूर्ण श्रेणी यह है कि: उस से एक दिन पहले और उसके एक दिन बाद का भी रोज़ा रखा जाए (अर्थात ९, १० और ११ मुहर्रम का रोज़ा रखा जाए) उसके बाद की श्रेणी यह है कि ९ और १० मुहर्रम का रोज़ा रखा जाए, और अधिकांश हदीसों में इसी का उल्लेख है, अन्तिम श्रेणी यह है कि केवल १० मुहर्रम का रोज़ा रखा जाए।” (ज़ादुल मआद २/७५,७६)

मुहर्रम के महीने से संबंधित संछिप्त रूप से यह वह बातें हैं जो सहीह हदीसों से प्रमाणित हैं, रोज़े के अतिरिक्त कोई और कार्य इस महीने में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से प्रमाणित नहीं है। अत: इसके अतिरिक्त जो ख़ुराफात के काम इस महीने में किये जाते हैं उनका मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की लाई हुई स्वच्छ और उज्जवल शरीअत (धर्म-शास्त्र) से कोई संबंध नहीं है।

وآخر دعوانا أن الحمد لله رب العالمين، وصلى الله على نبينا محمد وعلى آله وصحبه، وسلم تسليماً كثيراً.

अताउर्रहमान ज़ियाउल्लाह *
atazia75@gmail.com *